## बौद्ध परिषदें:

1. प्रथम बौद्ध संगीति **(483** ईसा पूर्व**):**
    - राजगीर में बुद्ध के निधन के तुरंत बाद आयोजित किया गया।
    - मुख्य रूप से बुद्ध की शिक्षाओं (सुत्त) और मठ के नियमों (विनय) को संरक्षित करने और सुनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
    - यह परिषद राजा अजातशत्रु द्वारा बुलाई गई थी और इसकी अध्यक्षता भिक्षु महाकस्सप ने की थी।
    - थेरवाद परंपरा इस परिषद के दौरान लिए गए निर्णयों को मान्यता देती है।
2. द्वितीय बौद्ध संगीति **(383** ईसा पूर्व**):**
    - Held at Vaisali.
    - कुछ मठवासी प्रथाओं, विशेष रूप से विनय नियमों के कड़ाई से पालन को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया।
    - इसका परिणाम यह हुआ कि संघ दो विद्यालयों में विभाजित हो गया: थेरवाद (रूढ़िवादी) और महासंघिक (उदारवादी)।
3. तीसरी बौद्ध परिषद **(250** ईसा पूर्व**):**
    - पाटलिपुत्र में सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान बुलाई गई।
    - इसका उद्देश्य मठवासी समुदाय के भीतर विवादों को सुलझाना था, विशेषकर विनय नियमों की व्याख्या के संबंध में।
    - इसके कारण अपरंपरागत विचार रखने वाले कुछ भिक्षुओं को निष्कासित कर दिया गया।
    - परिषद ने भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रसार में भी भूमिका निभाई, क्योंकि बाद में अशोक के मिशनरियों को भेजा गया था।
4. चौथी बौद्ध परिषद **(**पहली शताब्दी ई.पू.**):**
    - चौथी संगीति की सटीक तारीख और स्थान पर विभिन्न बौद्ध परंपराओं के बीच विवाद है।
    - प्रमुख उपलब्धियों में से एक थेरवाद पाली कैनन का संरक्षण था, जो सबसे पुराना बौद्ध धर्मग्रंथ है।
    - कुछ विद्वानों का सुझाव है कि यह परिषद श्रीलंका में आयोजित की गई होगी।

## बौद्ध ग्रंथ:

1. त्रिपिटक **(**तीन टोकरियाँ**):**
    - त्रिपिटक, जिसे पाली कैनन के नाम से भी जाना जाता है, बौद्ध धर्मग्रंथों का प्राथमिक संग्रह है।
    - इसमें तीन खंड शामिल हैं:
        - विनय पिटक: मठवासी समुदाय (संघ) के लिए नियम और कानून।
        - सुत्त पिटक: बुद्ध के प्रवचन और शिक्षाएँ।
        - अभिधम्म पिटक: बुद्ध की शिक्षाओं का दार्शनिक और सैद्धांतिक विश्लेषण।
2. महायान सूत्र**:**

- महायान बौद्ध धर्म के पास महायान सूत्र सहित ग्रंथों का अपना सेट है।
- इन ग्रंथों में लोटस सूत्र, हृदय सूत्र और कई अन्य शामिल हैं।
- वे बोधिसत्व की अवधारणा पर जोर देते हैं, जो सभी प्राणियों के लाभ के लिए आत्मज्ञान चाहता है।

3. **Jataka Tales:**
   - जातक कथाएँ बुद्ध के पिछले जीवन (जब वे बोधिसत्व थे) के बारे में कहानियाँ हैं।
   - ये कहानियाँ नैतिक शिक्षा और गुणों को दर्शाती हैं।
4. बौद्ध टिप्पणियाँ और ग्रंथ**:**
   - विभिन्न बौद्ध विद्वानों और दार्शनिकों ने बौद्ध शिक्षाओं पर विस्तार से टिप्पणियाँ और ग्रंथ लिखे हैं।
   - उल्लेखनीय कार्यों में वसुबंधु द्वारा अभिधर्म-कोस और मध्यमाका दर्शन पर नागार्जुन के लेखन शामिल हैं।

LEARNING MANTRAS